मृणाल पाण्डे के उपन्यासों में मानवीय मूल्य

डॉ. योगिता दत्तात्रय घुमरे (उशिर)
महात्मा गांधी विद्यामंदिर संचलित,
कला, विज्ञान व वाणिज्य महाविद्यालय,
मनमाड, जि. नासिक
फोन ९९२२१३५७३५

मानवीय मूल्य और साहित्य:

जीवन के हर क्षेत्र में 'मूल्य' का प्रयोग हमे दिखाई देता है । मूल्य शब्द का प्रयोग अशिक्षित व्यक्ति से लेकर बौद्धिक या चिंतक व्यक्ति तक हमेशा किया जाता है । अंग्रेजी में टंसनम इस शब्द से मूल्य को जाना जाता है, जिसकी मतलब है 'किमत' । मानवी जीवन और मूल्य इन दोनों का बहुत करीबी संबंध है । जीवन मूल्य मानवी जीवन को अधिक व्यवस्थित बनाते है । मूल्य मानव जीवन में कई प्रकार से कार्यान्वित होते है, जैसे वैयक्तिक, पारिवारीक, सामाजिक, राजनीतिक, धार्मिक आदी । इन मानवीय मूल्यों ने मानव जीवन को अत्यंत प्रभावित एवं उन्नत कर दिया है । साहित्य में तो मानवीय मूल्यों का होना आवश्यक ही है, क्योंकि साहित्य समाज जीवन का दर्पण है, और वास्तविक जीवन में जो घटित होता है, उसका चित्रण साहित्य में यथार्थ किया जाता है । इसलिए साहित्य में मूल्य स्पष्ट दिखाई देते है । मानवीय मूल्यों के बिना साहित्य अधुरा है । साहित्य और जीवन मूल्य के स्वरुप पर विचार कर लेना समीचीन है । इन्ही मानवी मूल्यों द्वारा समाज में पथप्रदर्शन का कार्य किया जाता है । साहित्य की सभी विधाएँ अपनी अपनी शैली के अनुसार जीवनमूल्यों को प्रतिष्ठित करने में महत्वपूर्ण स्थापित हुई है ।

साहित्य में उपन्यास और कहानी सर्वाधिक सशक्त रुप में देखी जा सकती है । आधुनिकता के युग में मानवीय जीवन मूल्यों का विघटन हो रहा है और इन्ही विघटन प्रक्रिया को कहानी या कथा विधा ने यथार्थता से दर्शाया है कि जो प्राय भ्रष्ट मानव को रास्ता दिखाने में निश्चित रुप से सिद्ध होगी । अत उपन्यासों ने भी यह कार्य उतनाही प्रभावी रुप से किया । परिवर्तन संसार का नियम है, उसी प्रकार मूल्य परिवर्तन एक अटल प्रक्रिया है । प्रत्येक युग में मूल्य परिवर्तन होते रहते है, और यह मूल्य परिवर्तन दर्शाने का कार्य हर युग में उपन्यास करता है । समय समय पर साहित्य सही मानवीय मूल्यों द्वारा समाज को दिशा दिखाता है । साहित्य ने करोडो लोगो तक हमारी सभ्यता, संस्कृति और जीवन मूल्यो को पहूँचाने का कार्य किया है ।

समकालीन महिला साहित्यकारों में लेखिका मृणाल पाण्डे एक सफल उपन्यासकार रही है । लेखिका के लगभग छह उपन्यास प्रकाशित हुए जिनमें 'देवी', 'विरुद्ध', 'पटरंगपुर पुराण', 'रास्तों पर भटकते हुए', 'हमका दियो परदेस', 'अपनी गवाही' इनमे टूटते बिखरते मानवीय संबंध, राजनीति के दाँवपेज, बेरोजगारी, पीढियों का संघर्ष, नारी का विद्रोही रुप आदि. समस्याओं को समाज के सन्मुख लाने का प्रयास किया है । युगीन परिस्थितियों में जीवन–मूल्य विघटित होते है और विघटित मूल्यों को सही दिशा देने का कार्य साहित्यकार करता है । लेखिकाने इसी विषय को अपने उपन्यासों में यथापूर्वक स्थान दिया है । "वर्तमान युग में सभी क्षेत्रों में क्रांतिकारी परिवर्तन हो रहा है । प्राचीन मूल्यों के प्रति विद्रोह और नवीन मूल्यों के प्रति आग्रह ऐंसी स्थिती आज निर्माण हो रही है।"[१] इस वाक्य से स्पष्ट होता है कि प्राचीन मूल्यों के प्रति विद्रोह स्पष्ट